inter-changeable, particularly in Doordarshan the professionalism suffers. It Is their day-to-day experience during all these year of the existence of Doordarshan that the field *is* really dominated by the older medium, that is, All India Radio, and it throttles the natural deve-lopment of Doordarshan.

There are other issues too.

My appeal to the Ministry would be, without waiting for another bout of agitations, to initiate a dialogue with the employees without harping on the numerical strength of this or that group. Let them try to sort out these issues so that there is a satisfiactory solution of the problem, and that the electronic media whose importance cannot be gainsaid, is in no way interrupted again and again. Thank you.

SHRI SUNIL BASU RAY (West Bengal); Sir, I want to associate myself with the sentiments expressed by Prof. Bhattacharya. I also request the Government to settle the dispute of the emp-loyees speedily. Thank you.

DEVELOPMENT OF HILL AREAS OF UTTAR PRADESH

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : (उत्तर प्रदेश) : माननीय उपसभाध्यक्ष जी, मैं आपकी अनुमति से भारत सरकार का ध्यान उत्तर प्रदेश के जो आठ पर्वतीय जिले हैं उनके पिछड़ेपन, उनकी गरीबी और वहां जो आर्थिक असमानता है उसकी ओर आकर्षित करना चाहता हूं । ये जिले गढ़वाल और कुमाऊं मंडल के नाम से जाने जाते हैं और इसमें उत्तरकाशी, चमोली, पिथौरागढ़, टहरी, देहरादून, पौड़ी, अल्मोड़ा और नैनीताल हैं ।

माननवर, इस क्षेत्र में प्रचुर प्राकृतिक संपदा है और बहुत ही रमणीय और सुंदर स्थान हैं लेकिन इन सब के होते हुए भी यह क्षेत्र बहुत गरीब है, ये बहुत ही अविकसित है और यहां के जो नौजवान हैं उनमें बेकारी है । उचित आर्थिक विकास न होने के कारण इन क्षेत्रों के जो लोग हैं उनमें बहुत ही सन्तोष व्याप्त है । इन जनपदों की विशेष भौगोलिक समस्याएं हैं लेकिन फिर भी क्षेत्रीय असंतुलन होने के नाते वहां पर घोर असन्तोष व्याप्त है ।

महोदय, भारत की आजादी की लड़ाई में इस क्षेत्र का बहुत ही अधिक योगदान रहा है जिसे भुलाया नहीं जा सकता है । आजादी के बाद इस क्षेत्र ने तीन मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश को दिए हैं, जिनमें भारत रत्न पं० गोविन्द बल्लभ पंत, श्री हेमवती नंदन बहुगुणा और श्री नारायण दत्त तिवारी बाद में ये केन्द्र के मंत्री रहे । इस प्रकार सार्वजनिक क्षेत्र में इस क्षेत्र का बहुत ही योगदान रहा है ।...

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : एक नाम भूल गए आप, के०सी० पंत का ।...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : वह मुख्य मंत्री नहीं थे ।...

स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्री **(श्री माखन लाल फोतेदार)** : चौधे सी०बी० गुप्ता थे जो वहां से इलेक्शन लड़े थे ।...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : ठीक याद दिलाया फोतेदार जी ने । सी०बी० गुप्ता जी जब उत्तर प्रदेश में चुनाव हार गए तो उन्होंने रानीखेत से चुनाव लड़ा था और वहां का प्रतिनधित्व किया । वह भी मुख्य मंत्री थे ।

मान्यवर, वहां पर 70 प्रतिशत लोग गरीबी की रेखा से नीचे हैं । इस क्षेत्र की प्रमुख नदियां गंगा, जमुना, टोंस, रामगंगा, काली नदी वहीं से निकलती हैं । यह क्षेत्र 51182 वर्ग किलोमीटर का है । करीब करीब 60 लाख की आबादी है और 19 विधान सभा क्षेत्र हैं और 4 लोक सभा के क्षेत्र हैं । इन क्षत्रों में 30 तहसील, 79 विकास खंड, 61 थाने, 6264 ग्राम सभाएं और 625 न्याय पंचायतें हैं लेकिन जितनी भूमि है उसका केवल 13 प्रतिशत यहां पर कृषि योग्य है। इतना असंतोष व्याप्त है कि कभी-कभी यहां पर यह भी मांग की जाती है कि इसका उत्तराखंड के नाम से अलग प्रदेश-

बना दिया जाए या उत्तरांचल कर दिया जाए, यह अलग व्यवस्था है। पिछली भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने एक प्रस्ताव पारित किया था जो केन्द्रीय सरकार के पास विचाराधीन है। केन्द्रीय सरकार ने स्वयं इस संबंध में कुछ सूचनाएं प्रदेश सरकार से मांगी थी और मेरी जानकारी के अनुसार प्रदेश सरकार ने केन्द्रीय सरकार के पत्र दिनांक 27 दिसम्बर, 1991 का जवाब 4 मार्च, 1992 को जितनी भी सूचनाएं थी भारत सरकार को उपलब्धबने करा दी हैं। लेकिन यह क्षेत्र अलग यह एक अलग प्रश्न है। इस क्षेत्र क विकास होना चाहिए और इस प्रदेश के इस क्षेत्र में जो गरीबी है, जो लोगों क। असंतोष है उसको दूर करने के लिए भरत सरकार को विशेष ध्यान देना चाहिए। इसलिए मैं आपके माध्यम से भारत सरकार से अपेक्षा करता हूं कि वह इस संबंध में शीघ्र ही कदम उठायेगी जिससे कम से कम इस क्षेत्र लोग अपने को उपेक्षित महसूस न करें।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : मैं आदरणीय श्री सत्य प्रकाश मालवीय जी के विचारों से सहमति व्यक्त करते हुए एक बात जोड़ना चाहता हूं कि इस क्षेत्र में जो तराई का क्षेत्र है आजतक वहां भूमि सुधार नहीं हुआ और एक ओर गरीब और भूमिहीन खेतिहर मजदूर झोपड़ियों में रह रहे है और दूसरी तरफ हजारों-हजार एकड़ के फार्म एक-एक व्यक्ति के पास हैं। एक तो भूमि सुधार होना चाहिए और दूसरे टिहरी बांध जो खटाई में पड़ा हुआ है और जो प्रोसपैरिटी इस क्षेत्र में ला सकता है वह टिहरी डैम राजनीतिक कारणों की वजह से पड़ा हुआ है उसका निर्माण होना चाहिए ताकि इस क्षेत्र का विकास हो सके।

Likely closure of Barauni oil refinery due to financial constraints

श्री शंकर दयाल सिंह (बिहार) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मेरा जो आज विशेष लोक महत्व का विषय है वह बिहार के बरौनी ऑयल रिफाइनरी की जो वर्तमान स्थिति है उसन सम्बन्धित है। बिहार में पब्लिक सेक्टर के अन्तर्गत इस समय जो मुख्य रूप से उपक्रम कार्यरत हैं उनमें से सिंदरी, बरौनी, बोकारो, हैवी इंजीनियरिंग कारपोरेशन रांची और कोल इंडिया के जो उपक्रम है मुख्य रूप से माने जाते हैं। इसमें सिंदरी फर्टीलाइजर कारपोरेशन और बरौनी ऑयल रिफाइनरी ऐसे उपक्रम है जिनके ऊपर प्रश्नचिह्न लगा हुआ है। विगत कई वर्षों से ये घाट में चल रहे हैं और घाट में चलने के कारण सरकार को जहां एक ओर इन पर अधिक ध्यान देना चाहिए वहां सरकार अधिक तो क्या पूरा भी ध्यान नहीं दे रही है जिसके कारण ये दोनों उपक्रम बराबर बंद होने के क्रम में रहते हैं। मुख्य रूप से इसका कारण यह है कि सिंदरी को यहां माडर्नइजशन के लिए फंड मिलना चाहिए, वहां दुसरेदूसरे फर्टीलाइजर कारपोरेशन को तो मिले लेकिन सिंदरी में भारत सरकार ने कोई पैसा इन्वेस्ट नहीं कियरी और दूसरे ओर बरौनी ऑयल रिफाइनल जिसके बारे में मुख्य रूप से मैं सवान उठा रहा हूं जिसकी क्षमता 4 मिलियले टन क्रूट ऑयल शोधन की है। 4 मिलिया॒ टन क्रूड ऑयल शोधन की क्षमता वह रिफाइनरी को इस समय केवल 2 मिलिन टन क्रुड ऑयल मिलता है, मतलब आधा। वह भी कभी-कभी नहीं मिलता यानी उससे कम मिलता है। इसका मुख्य कारण यह है जिस समय यह उपक्रम बना था देश में इस तरह के उपक्रम बहुत कम थे। देश में उस समय जब इसका निर्माण हुआ था तो लोगों को आशा बंधी थी दो कारणों से। एक तो पूर्वांचल असम से क्रूड ऑयल वहां आना था जिसकी वजह से उसकी सप्लाई हर जगह होती थी। उस समय देश में बहुत जगहों में हमारे परिशोधन कारखाने नहीं थे। दूसरी बात यह है कि बिहार का जो बहुत बड़ा हिस्सा उत्तर बिहार में रहता है उस बेरोजगारी को दूर करने के लिए और उसका विकास करने के लिए, उसकी समृद्धि के लिए बरौनी ऑयल रिफाइनरी का निर्माण हुआ था। हमारे मित्र श्री अहलूवालिया जी वहीं के रहने वाले हैं, वहीं रहते हैं। वह अच्छी तरह से इन समस्याओं को जानते हैं।